Sharya Academy

हिंदी | कक्षा दसवीं

अपठित पद्यांश

निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए।

भोर हुई पेड़ों की बीन बोलने लगी,
पात-पात हिले डाल-डाल डोलने लगी।
कहीं दूर किरणों के तार झनझना उठे,
सपनों के स्वर डूबे धरती के गान में।
लाखों ही लाख दीए तारों के खो गए,
पूरब के अधरों की हल्की मुस्कान में।
कुछ ऐसे पूरब के गाँव की हवा चली,
खपरैलों की दुनिया आँख खोलने लगी।
जमे हुए धुएँ-सी पहाड़ी है दूर की,
काजल की रेख-सी कतार है खजूर की।

सोने का कलश लिए उषा चली आ रही है,
माथे पर दमक रही आभा सिंदूर की।
धरती को परियों के सपनीले प्यार में,
नई चेतना नई उमंग बोलने लगी।
कुछ ऐसे मोर की बयार गुनगुना उठी,
अलसाए कुहरे की बाँह सिमटने लगी।
नरम-नरम किरणों की नई धूप में,
राहों के पेड़ों की छाँह लिपटने लगी।
लहराई माटी की धुली-धुली चेतना,
फसलों पर चुहचुहिया पाँख बोलने लगी।

(i) कवि ने किस समय का चित्रण किया है?
(क) प्रात:काल
(ख) संध्या
(ग) दोपहर
(घ) रात्रि
उत्तर
(क) प्रात:काल

(ii) दीए किसके हैं?
(क) जुगनुओं के
(ख) माटी के
(ग) तारों के
(घ) पीतल के
उत्तर
(ख) माटी के

(iii) दूर की पहाड़ी कैसी दिखाई दे रही है?
(क) अस्पष्ट
(ख) जमे हुए दही-सी

(ग) धुंधली
(घ) जमे हुए धुंए-सी
उत्तर
(घ) जमे हुए धुंए-सी

(iv) सोने का कलश क्या है?
(क) सूर्य
(ख) तारे
(ग) चंद्रमा
(घ) बादल
उत्तर
(क) सूर्य

(v) भोर की बयार के गुनगुनाने का परिणाम क्या हुआ?
(क) चुहचुहिया पाँख खोलने लगी
(ख) राहों के पेड़ों की चाह लिपटने लगी
(ग) अलसाए कुहरे की बाँह सिमटने लगी
(घ) माटी में चेतना आ गई
उत्तर
(ग) अलसाए कुहरे की बाँह सिमटने लगी